REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के महाकव्य में नारी

Sunita Singh
B.Com,M.Com.B.A,M.A,B. Ed ,M.Phil(Hindi)
Lecturer(Shree Agrasen Mahavidyalaya)Dalkola.

प्रस्तावना :

पुरुषों के समकक्ष स्त्रियों की राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक समानता का आंदोलन सदियों से चलता आ रहा है। नारी पदले पुरुषों के मुकाबले शारीरिक और बौद्धिक रुप से हीनतर समझी जाती थी। कानुन और धर्मशास्त्र दोनों ही ने नारियों की पराधीनता की व्यवस्था दे रखी थी। नारियां अपने नाम से कोई सम्पति नहीं रख सकती थीं, व्यावसाय नहीं कर सकती थीं। न ही वे अपने बच्चों पर अथवा स्वयं अपने ऊपर कोई अधिकार जता सकती थीं। सबसे पहले अमेरिका में नारी मुक्ति के मसले को संविधान में शामिल किया गया। 1848 में नारी स्वतंत्रता पर एक घोषणापत्र जारी किया गया जिसमें पूर्ण कानूनी समानता, पूर्ण शैक्षिक और व्यावसायिक अवसर, समान मुआवजा और मजदूरी कमाने का अधिकार तथा वोट देने के अधिकार की मांग की गई थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में 1920 में नारी मताधिकार की जीत हासिल कर ली गई। 1946 में नारी की दशा पर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने एक आयोग गठित किया जिसका दायित्व विश्व भर की महिलाओं के लिए समान राजनीतिक अधिकार, समान आर्थिक अधिकार और समान शैक्षिक अवसर का अधिकार दिलाना था। 1966 में राष्ट्रीय महिला सुगठन किया गया जिसमें 400 से अधिक स्थानीय शाखए खूल गयी, इन शाखाओं के द्वारा गर्भपात सुधार, अनुपोषित शिशु देखभाल महिलाओं के लिये समान वेतन, महिलाओं के शिक्षा राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक सत्ता हासिल करने की दिशा में सभी कानूनी और सामाजिक बाधाओं के खात्में के लिए दबाव डाला। आरंभ में स्त्रिया लोकतांत्रिक अधिकार के लिए संघर्ष कर रही थीं, आज स्त्रियां घर के भीतर स्त्री पर पुरुष के दवाब और अधिकार के विरुद्ध संघर्ष कर रही है।

एशिया में नारीवाद का जन्म तब हुई जब लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति चेतना जागृत हुई। उन्नीसवी और बीसवी सदी में स्त्री अधीनता के विरुद्ध उठि आवाजों ने अनेक मांगो का रुप ले लिया, जैसे विधवा का पुनर्विवाह, बहुविवाह, सती दाह प्रथा पर रोक तथा स्त्रियों के लिए शिक्षा व कानुनी या संवैधानिक स्वतंत्रता।

भारत की आरंभिक महिला आंदोलन कर्ताओं में प्रमुख थी पंडिता रमाबाई और सावित्रीबाई फुले। सावित्रीबाई फुले ने स्त्रियों की शिक्षा के लिए महत्व पूर्ण काम किया। स्त्रियों के लिए अलग स्कूल खोला।

यह सच है कि पिछले दो सो वर्षो में स्त्रियों ने बहुत से क्षेत्रों में काफी तरक्की की है। हमारे संविधान ने काफी हद तक औरतों को बराबरी का दर्जा दिया है परन्तु इन सब के बावजूद आज भी लगभग हरदेश में स्त्रियों को न समान अधिकार हैं और न पूरी आजादी है। आज भी लगभग हर जगह पुरुष सत्ता का बोलबाला है।

हिन्दी साहित्य के पद्य विधा में नारी मुक्ति को लेकर कब से साहित्यकारों ने लिखना आरम्भ किया यह जानना अति आवश्यक है। हिन्दी साहित्य की काव्य विधा आधुनिक काल की देन है जिसका विकाश पुनर्जागरण काल में हुआ और जिसे भारतेन्दु ने स्थापित किया। भारतेन्दु जी से पूर्व हिन्दी पद्य का कोई निश्चित स्वरुप विकसित नही हो पाया था। हिन्दी साहित्य में काव्य के क्षेत्र में जनजागरण के ओर सर्वप्रथम ध्यान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का माना गया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक नीलदेवी, भारत दुर्दशा आदि में उल्लिखित कविताओं के उन्तर्गत तत्कालीन जनजीवन की पतिता अवस्था का ऐसा मार्मिक चित्रण किया गया है जो हमारे हृदय को कचोटने लगता है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पश्चात प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी, राधा चरण गोस्वामी, अम्बिका दत्त व्यास आदि ने अपने अपने नाटकों में ऐसी अनेक कविताएं लिखी जिसमें समाज में व्याप्त कुरीतियों देश का वर्तमान पतितावस्था के प्रति रोष प्रकट किया गया। इस प्रकार मध्यकाल में राजनीतिक चेतना का संचार और राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ–साथ नारी पुरुष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर राष्ट्रिय आन्दोलन में भाग ले रही थी। नारी श्रृंगार कालीन सामन्ती बिलासिता का उपकरण न रहकर देश की राष्ट्रीय निर्माण में अपना योगदान दे रही थी। नारी की महता, त्याग, राष्ट्रीय निर्माण आदि भावनाओं को सबके सामने लाने के लिये मैथलीशरण गुप्त ने 'यशोधरा', 'साकेत' या फिर 'पंचवटी' या 'जयद्रथवध' काव्य का निर्माण किया। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी रसवंती, रेणुका, सामधेनी और उर्वशी में नारी की त्याग बलिदान को सबके सामने लाने का प्रयास किया।

आधुनिक युग का प्रतिनिधि माने जाने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं का हिन्दी पद्य साहित्य में अप्रतिम योगदान है। 'गुप्त' और 'दिनकर' ने अपनी लेखनी के द्वारा नारी के योगदान महत्व को लोगो तक पहुचाने मे भरपुर प्रयास किया तथा यह सिद्ध करना चाहा की राष्ट्र का कल्याण तभी हो सकता है जब नारी पुरुषो के साथ कंधा से कंधा मिला कर चले। चाहे राष्ट्र हो या फिर देश या परिवार सभी के विकास के लिये नारी का योगदान महत्वपुर्ण है। अन्य आधुनिक कवियों मे श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि कवियों ने भी अपनी रचनाओं द्वारा स्त्री–जाति के प्रति अत्यचारों की और ध्यान आकृष्ट किया और प्रभु से उसमें सुधार करने की प्रार्थना की है –

'प्रार्थना अब ईश की सब करहु कर जुग जोर।
दीनबन्धु सुदृष्टि कीजै बाल–विधवा ओर।। '

श्रीधर पाठक समाज में महिला जागृति चाहते हैं, नारी के प्राचीन महत् स्वरुप की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करना चाहते है, परन्तु इस दिशा में सबसे अधिक सराहनीय कार्य अयोध्या सिंह उपाध्याय जी ने किया है। अयोध्या सिंह उपाध्याय जी ने अपने काव्य में नारी के महान स्वरुप का उदघाटन किया है।

स्त्री की बर्तमान अवस्था को देखते हुये ऐसा ज्ञात होता है कि सदिसों से नारी अपने अधिकार से वंचित रही हो परन्तु यह सत्य नही है। इतिहास के विभिन्न कालखण्डो का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि वेदकाल में स्त्री को बहुत अधिकार प्राप्त थे उस समय स्त्रीयाँ ब्रम्हवादिनी और ऋषिकाएँ थी। स्त्री अपने गुरु को और अपने गुरुकुल को स्वयं चुनती थी। महिला एक गुरुकुल से दुसरे गुरुकुल विद्या अर्जन के लिए अकेली जा सकती थी। आजीवन ब्रम्हचारिणी या गृहिणी अपनी मर्जी से बन सकती थी। महिला रणक्षेत्र में भी जाती थी। वैदिक युग में स्त्री धर्म समाज और शिक्षा, प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी निभाती थी। भारत की सभ्यता हो या सिन्धु घाटी की मुर्तियों मे नारी प्रमुख थी इसलिए उस समय माता के नाम से ही पुत्र का परिचय दिया जाता था और माता ही पुत्र को पिता का परिचय देती थी।

धिरे–धिरे उपनिषद काल में आते आते नारी की स्थिती इतनी बदली और इतनी गिरी की भगवान बुद्ध ने उस समय की स्त्रियों को भिक्षुनी भी बनाना स्वीकार नही किया। यहाँ तक की रामायण और महाभारत काल में भी विरोध करने वाली स्त्री नही मिलती है।

वैदिक काल में जो स्वयंवर प्रथा थी पिता पुरुष्कार के रुप में अपनी पुत्री को विजेता के हाथो में सौप देते थे जैसा सीता के साथ भी यही हुआ अगर धनुष राम के अलावा रावण तोड़ता तो क्या ? सीता की विवाह रावण से कर दी जाती तो क्या इस उद्भुत प्रथा को स्वयंवर कहा जा सकता था। बाद में देंश छोटे–छोटे राज्यों में बट गया और फिर छोटे–छोटे राज्य के राजा भी बने। किसी की कन्य सुन्दरी हुई तो उसे पाने के लिए आपस में युद्ध भी हुये और जो जीत गया वह उस सुन्दरी लड़की को अनपे साथ ले जाता था। युद्ध में हासिल की हुई लड़की किसी हरम या फिर राजमहल में अपनी जीवन को व्यतित कर देती थी जिस कारण उसके विरोध का किसी को पता नहीं चलता था।

फिर एक समय आया जब सुन्दर कन्या को लेकर आपस में लड़ाईयाँ न हो इसलिए जो सबसे सुन्दर होती थी वह स्त्री किसी की पत्नी न बन सके उस लड़की की विवाह कृष्ण की मूर्ति के साथ करा दी जाती थी जो आगे चलकर देवदासी प्रथा के नाम से जाना जाने लगा। दक्षिण में अलवार की परम्परा में पहली महिला संत अंडाल थी। अंडाल को विवाह का वस्त्र पहनाकर रंगनाथ के मंदिर में रंगनाथ के मूर्ति के पास समर्पित कर दिया गया। अंडाल आजीवन कृष्ण की पत्नि बनी रही उसके लिए यह जीवन संघर्ष था परन्तु उसने किसी भी प्रकार की कोई विरोध नही किया।

मध्ययुग की नारी स्त्रीयों में पहली नारी मीरा है जिसने उपने उपर हुये उत्याचार का विरोध किया। आज तो स्त्री को बहुत सारे अधिकार प्राप्त है लेकिन उस समय जब महिलाओं को अधिकार नहीं थे तब मीरा ने विद्रोह किया मीरा कहती है –

''एकता में विश्वास है, एकता में निवास है''

मीरा के विद्रोह का एक उदभुत रुप है – उत्सुकतामय का जो आनेवोल कुछ स्त्रीयों के लिये न जाने कितने विद्रोह को जगा दिये। जिस प्रकार लोग एक दीपक से कई दीपक जला देते है, उसी प्रकार मीरा के विद्रोह ने कई विद्रोह जगाये। मीरा हमारे युग की पहली महिला सत्याग्रही है जिसने अपने युग से सत्य का आग्रह किया।

रीतिकाल में कवियों ने अपने काव्य में नारी को काम–कीड़ा–निपुण, रुपगर्विता एवं उल्हड़ यौवन के रुप में चित्रित किया है। नारी जीवन की पवित्रता, विशुद्ध प्रेम सात्विकता आदि के स्थान का प्रधान्यता दिया गया है। यही कारण है कि रीतिकाल की राधा को अल्हड़ किशोरी के रुप में चित्रित किया गया है। यही कारण है कि यहाँ राधा को वियोगिनी के रुप में हाम पाते है। शायद सह विभोग जबरदस्ती उसपर लाद दिया गया है।

रीतिकाल के उपरान्त आधुनिक काल में कुछ समय बाद लोग–मर्यादा, लोक हित विश्ववन्धुत्व, मानवता प्रेम आदि की विचार धारा ने मानव–जीवन में एक आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए शंखनाद किया। उस समय के कवियों ने भी अपनी कविताओं के द्वारा कांति उत्पन्न करने का संकल्प किया और उनकी नारी–सम्बन्धी भावनाएँ बदलने लगी। नारी–स्वतन्त्रता एंव नारी–शिक्षा के अतिरिक्त नारी–जीवन का सर्वागीण विकास हो इस युग की प्रमुख देन है। युग की इसी भावना से प्रेरित होकर 'हरिऔध' जी ने भी अपनें 'प्रियप्रवास' में लोक–दित में सतत संलग्न श्रीकृष्ण की भाँति राधा को भी परोपकार, लोक–सेवा, विश्व–प्रेम आदि से परिपूर्ण चित्रित किया है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी सन 1890 ई0 से लेकर मृत्यु–पर्यन्त साहित्य सेवा करते रहे। खड़ीबोली को काव्य भाषा के पदपर प्रतिष्ठित करने वालें कवियों में अयोध्या सिंह उपाध्याय का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है। खड़ीबोली काव्य के विकास में इनका योग निश्चित रुप से बहुत महत्वपुर्ण है। यदि खड़ीबोली का प्रथम कवि होने का श्रेय इन्हींको है तो 'प्रियप्रवास' खड़ीबोली का प्रथम महाकाव्य। 'हरिऔध' को कविरुप में सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके प्रबन्ध काव्य 'प्रियप्रवास' के कारण मिली। 'प्रियप्रवास' में राधा के चरित्र द्वारा नारी के महत्व को सबके सामने लाने का भरपुर प्रयास 'हरिऔध' जी ने किया है। 'प्रियप्रवास' में राधा अपने प्राचीन रुप का पूर्णतय परित्याग करके अपने प्रिय के सर्वथा अनुकूल लोकोपकार निरत जनसेविका एंव देशभक्त भारतीय नारी रत्न के रुप में अंकित की गई है, जिसकी रुप माधुरी, सुकुमारता परदु:कातरता अत्यन्त प्रभावोत्पादक है और जो स्त्रियोचिज समस्त गुणों से सम्पन्न होकर भी श्री कृष्ण के प्रेम में आजन्म सच्ची प्रमिका का धर्म पालन करती हुयी लोक–सेवा एंव लोकोपकार के लिए आपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है। श्रीकृष्ण के विरह में व्यथित रहकर भी अपनी व्याथा को अपने हृदय में छिपाये अन्य व्यथित एंव पीड़ित जनों के उपचार में सदैव निरत रहती है। आधुनिक युग की राधा रीतिकालीन एंव भक्तिकालीन राधा की भाँति श्रीकृष्ण से मिलने के लिए व्यथित एंव बेचैन नही दिखाई देती अपितु लोक–सेवा का व्रत लेकर प्रिय की भाँति ब्रजभूमी की सेवा में अपना सारा जीवन उत्सर्ग कर देती है। इस प्रकार यहाँ कवि 'हरिऔध' जी ने राधा के चपित्र के द्वारा आधुनिक युग की नारी को लोक–सेवा लोकोपकार एंव लोकहित के कार्यो में लीन रखकर अपने जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा दी है।

सूर ने राधा के माध्यम से जिस नारी का चित्रण किया है वह कृष्ण के विरह में व्याकुल होकर इधर–उधर मारी–मारी फिरती है। उसमें ना तो लोक के उत्तरदायित्व की चिन्ता है ना तो लोक–परलोक बनाने की ही परवाह है। उद्धव गोपियों के अतिथि और प्रियतम के संदेश वाहक थे परंतु गोपियों ने आदरणीय अतिथि उद्धव को भी बुरा–भला कहकर आतिथ्य धर्म का पालन भी नही करती है पर राधिका वहाँ जाती भी नही है। राधा की आँखों से कृष्ण के विरह में निरन्तर आंशु गिरते रहते है जिस कारण राधा की आँखे धस गई है और शरिर कंकाल–मात्र रह जाता है। राधा माधव–माधव रटते–रटते स्वयं माधव हो गई है।

नन्ददास जी ने भ्रमर गीत में राधा के चरित्र के द्वारा नारी की बुद्धि तत्व को प्रमुखता दिया है। भ्रमरगीत में नन्ददास की गोपियाँ एक चतुर वकील है जो अपने तर्क द्वारा उद्धव को पराजीत कर देती है परन्तु कृष्ण से अलग होने के विरह में दिन–रात जलती रहती है।

'प्रियप्रवास' में 'हरिऔध' जी ने जिस राधा का चित्रण किया है वह आधुनिक युग की राधा है जो विरह में भी जी रही है पर उदारता, लोक–सेवा, विश्वप्रेम अदि को नही भुलती और साथ ही राधा दिव्य गुण सम्पन्न होने के कारण मानवी से देवी का रुप धारण कर लेती है। 'प्रियप्रवास' की राधा न तो जयदेव एंव विद्यापति की राधा की तरह

कुसुमाकर के बाणों से विद्ध होकर विलास–कामना के अपूर्ण रह जाने पर व्यथित एंव बेचैन दिखाई देती है और न सूर, नन्ददास जैसे कृष्ण भक्त कवियों की राधा के समान रात–दिन आंसू बहाती हुई अपने प्रियतम को पुकारती रहती है, अपितु वह

विरहिणी राधा श्रीकृष्ण की अनन्य प्रेमिका होने के कारण उन्हीं की तरह विश्व–प्रेम, विश्व–मैत्री एंव करुणा की उदार मूर्ति बन जाती है। जैसे राधा के प्राणेश्वर श्रीकृष्ण कठिन सेवा एंव

लोकहित के पद पर चल परते है; वैसे ही राधा भी उसी मार्ग की अनुगामिनी बन जाती है और लोकोपकार को अपने जीवन का चरम उद्देश्य बना लेती है। राधा श्रीकृष्ण के लौटने की कामना नही करती कारण वह कृष्ण के सेवा–कार्य में बाधा नही डालना चहती और न ही किसी प्रकार कृष्ण को लोकहित सम्बन्धी कार्यो से विमुख करके अपने समीप ही क्रीड़ा कुंज में बन्द रखना चाहती है, अपितु वह उद्धव से स्पष्ट कह देती है –

प्यारे जीवें जग हित करे; गेह चाहे न आवें।

अर्थात राधा अपने आप को समाज–सेवा के लिये अर्पित कर देती है। राधा प्रतिदिन नन्द और यशोदा को सांत्वना देने के लिये उनके घर जाती रहती है। चींटियों को आटा देती है, विहंगो को अन्न प्रदान करती है और कभी किसी लता या वृक्ष से पत्ता नही तोड़ती। इस तरह राधा पीड़ितों की औषधि, दीनो की बहिन, अनाथों की जननी और ब्रज–भूमी की आरध्य देवी बन जाती है। इस प्रकार राधा के चरित्र द्वारा 'हरिऔध' भारत की आधुनिक नारी की कर्तव्यों को सभी भारतवासी के सम्मुख लाने का प्रयास किया है। इसलिए 'प्रियप्रवास' की राधा आपने परम्परागत रुप में न होकर नवीन युग के अनुरुप गुणों से सम्पन्न है। वह आँसू बहाने वाली विरहिणी मात्र नही है अपितु कर्तव्य–परायणता, परदुःख कातर मरीयसी लोकसेविका है।

'वैदेही–वनवास' 'हरिऔध' जी का रामकथाश्रित विशिष्ट महाकाव्य है। इस काव्य द्वारा कवि 'हरिऔध' जी ने एक ओर प्रचीन के प्रति श्रद्धावान थे तो दूसरी ओर नवीन को अपनाने का भी उनका अपना आग्रह था। यही कारण है कि 'वैदेही–वनवास' में 'वैदेही' स्वंय वनवास के लिए उद्यत है। यहाँ कवि ने 'वैदेही' के द्वारा आधुनीक जाग्रत नारी का सुष्ठू स्वरुप को चित्रित किया है। यहाँ सीता–निर्वासन को नये कोण से उपस्थित किया गया है।

इस प्रकार नारी के क्रमिक विकास से सम्बन्धित काव्य धारा का अध्ययन करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि हिन्दी के अन्य सभी कवियों के अपेक्षा अयोध्या सिंह उपाध्याय जी की रचनाओं में सर्वाधिक नारी चेतना एंव नारी जागरण की भावना विद्यमान है। यद्यपि समाज के विकास में नारी नीव की भुमिका निभाती है। किसी समाज, राज्य या फिर राष्ट्र के विकास का आंकलन इन लोगों के विकास से ही किया जाता है परंतु नारी को उन सभी अधिकारों से वंचित रखा जाता है जो एक सम्पन्न मनुष्य को प्राप्त है। 'हरिऔध' अपने पद्य साहित्य में विकृत समाज में नारी अत्याचार, उत्पीड़न शोषण को दर्शाते हुए मानव जाती की आधी जनसंख्या स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को समाज के समक्ष रखते हुए उन्हें इस ज्वलन्त समस्या पर नवीन दृष्टि के साथ सोचने के लिए बाध्य करते हैं। व्यष्टि से समष्टि तक की व्यापकता ही प्रत्येक युग और प्रत्येक देश में साहित्य की

उत्कृष्टता की कसौटी मानी गई है जो 'हरिऔध' के साहित्य में स्पष्ट रुप में दिखता है। हिन्दी पद्य साहित्य को सही दिशा प्रदान करने और उसे सावधानी पूर्वक प्रयोग करना 'हरिऔध' जी का अभिष्ट रहा है ताकि उसे सामाजिक यर्थाथ के गहराई से जोड़कर पाठकों को सही सामाजिक परिवर्तन की ओर अग्रसर कर सके। उनका सम्पूर्ण पद्य साहित्य वर्तमान की वास्तविकताओं के चित्रण द्वारा उसके प्रति वितृष्णा एंव घृणा पैदा कर स्वर्णिम भविष्य की सम्भावनाओं को परिपूर्ण करता है। 'हरिऔध' का पद्य साहित्य सामाजिक अव्यवस्था, असमानता एंव जीवन के कटू यथार्थ से भरा हुआ आस–पास के नारी जीवन को बेहतर बनाने की लेखकीय अभिलाषा से मुक्त है। 'प्रियप्रवास' काव्य के द्वारा 'हरिऔध' जी ने राधा के चरित्र के द्वारा आधुनिक युग की नारी को मूल व सम्पूर्ण रुप में समझना तथा तत्कालीन नारी की मूल्यों की स्थापना के साथ परम्परित व साम्प्रतिक परिप्रेक्ष्य में नारी चेतना को बल प्रदान करने में महती भूमिका निभाते हैं।

Sunita Singh
B.Com,M.Com.B.A,M.A,B. Ed ,M.Phil(Hindi)
Lecturer(Shree Agrasen Mahavidyalaya)Dalkola.